क)कबिरा मन पंछी भया भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय ।।"
(ख) "साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप। ।"
उत्तर:
(क) कवि कहते हैं कि मन एक चंचल पक्षी के समान होता है। इसे जहाँ अच्छा लगता है, वहीं चला जाता है। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि जैसी हमारी संगति होती है, वैसा ही हमारे जीवन पर उसका प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमें सत्संगति में रहना चाहिए |
(ख) कबीर जी कहते हैं कि सत्य के बराबर कोई तप नहीं हैं क्योंकि सत्य का पालन करना कठिन कार्य है तथा झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्य है उसी के हृदय में स्वयं ईश्वर विराजते हैं।

सोच-विचार के लिए

प्रश्न- पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) "गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।" इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।
(ख) "बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर ।" इस
दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन - कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए ।
(ग) "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।" क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।
(घ) "जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय।।" हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है ? उदाहरण सहित बताइए ।
उत्तर:
(क) जी, हाँ। मैं इससे सहमत हूँ क्योंकि गुरु ने अपने ज्ञान से ही हमें ईश्वर तक

पहुँचने का रास्ता बताया है इसलिए गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान देना सर्वोचित है।

(ख)) दयालु, सहानुभूति, आत्मविश्वासी, उदारता, धैर्य, सत्य एवं मृदुभाषी, करुणा, ईमानदारी, सहनशीलता तथा निःस्वार्थता जैसी विशेषताएँ मनुष्य में होनी चाहिए ।

(ग) (ग) मैं मानता हूँ कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वतः पर भी पड़ता है। दरअसल कुछ महीने पहले मेरे स्कूल की तरफ से बच्चों को पिकनिक पर ले जाया गया था। उसके लिए बड़ों की अनुमति अनिवार्य थी । मेरे दादा जी बहुत उग्र और क्रोधी स्वभाव के हैं। उनसे अनुमति माँगना बहुत कठिन था। । मैंने भी किसी तरह हिम्मत की और बड़े ही प्रेम एवं शालीनता के साथ अनुमति माँगी। उन्होंने हँस कर कहा कि इतने प्रेम से आज्ञा माँग रहे हो तो मैं कैसे मना कर सकता हूँ? इस प्रकार मीठी वाणी और सुंदर शब्दों का जादू चल गया और मुझे आज्ञा मिल गई

(घ)) हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का बहुत प्रभाव पड़ता है। । मैं कक्षा के कुछ बुरे विचार वाले छात्रों की संगति मेंपूरा दिन मौज- मस्ती करता रहता।मैं भी उसके साथ रह कर ऐसे ही विचारों वाला हो गया। इन विचारों ने मेरे कार्यों पर प्रभाव डाला और मैं भी पढ़ाई से जी चुराने लग गया। परिणामस्वरूप, मेरे अंक बहुत ही कम आए । मुझे बहुत लज्जा महसूस हुई। मेरी माँ ने भी मुझे समझाया कि कोई बात नहीं अब फिर से अच्छी तरह से पढ़ाई में मन लगाओ और ऐसे लड़कों की संगति मत करो। उस दिन से लेकर मैंने सदैव अच्छे बच्चों के साथ ही मेल रखा और अब पुन: मेरी गिनती कक्षा के अच्छे बच्चों में होती

<u>अनुमान और कल्पना से</u>

) “गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।”

- यदि आपके सामने यह स्थिति होती तो आप क्या निर्णय लेते और क्यों ?
- यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो क्या होता?

उत्तर:

- मैं अपने गुरु के चरणों को पहले नमन करता क्योंकि उन्हीं के ज्ञान एवं मार्गदर्शन से मुझे ईश्वर के दर्शन हुए होते।
- संसार में ज्ञान का प्रकाश कभी नहीं फैलता और ईश्वर प्राप्ति भी संभव न होती ।

(ख) "अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप ।"

- यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है या बहुत चुप रहता है तो उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है ?
- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक या कम हो तो क्या परिणाम हो सकते हैं?
- आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर:

- अधिक बोलने वाले व्यक्ति की बात का लोगों पर कम असर पड़ता है और कम बोलने वाले को लोग संकोची और डरपोक समझते हैं।
- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक हो तो फसलें बर्बाद हो जाती हैं, बाढ़ आ जाती है तथा जीवन तहस-नहस हो जाता है। इसी तरह अगर वर्षा आवश्यकता से कम हो तो अकाल पड़ जाता है लोग भूख-प्यास से दम तोड़ने लगते हैं।
- आँखें खराब हो जाती हैं। इससे स्वास्थ्य संबंधी अनेकों अन्य समस्याएँ भी हो जाती हैं जैसे- सिरदर्द, नींद की समस्या, तनाव, सामाजिक अलगाव और अवसाद आदि। इसके अलावा कक्षा में खराब शैक्षणिक प्रदर्शन और समय की बर्बादी भी होती है।

(ग) "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।"

- झूठ बोलने पर आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
- कल्पना कीजिए कि आपके शिक्षक ने आपके किसी गलत उत्तर के लिए अंक दे दिए हैं, ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

उत्तर:

- झूठ बोलने पर हम लोगों का भरोसा खो सकते हैं। हमें समाज में झूठ पकड़े जाने पर शर्मिन्दगी उठानी पड़ सकती है और हमारा आत्मसम्मान खतरे में पड़ सकता है।
- मैं जाकर बड़ी शालीनता के साथ उन्हें बता दूँगा कि उन्होंने मुझे गलती से उस प्रश्न के उत्तर के अंक दे दिए हैं जो गलत था।

(घ) “ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।”

- यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर और शांति देने वाली बना लें तो लोगों में क्या परिवर्तन आ सकते हैं?
- क्या कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहाँ कटु वचन बोलना आवश्यक हो ? अनुमान लगाइए ।

उत्तर:

- सभी एक दूसरे की बात को बड़े ध्यान से सुनेंगे और सबका मन प्रसन्न एवं शांत रहेगा। लोग एक-दूसरे से प्रभावित होंगे तथा एक-दूसरे के असंभव कार्य को भी संभव बनाने का भरपूर प्रयत्न करेंगे। प्रेम एवं भाईचारा बढ़ेगा । हमारे संबंध सुदृढ़ होंगे।
- मेरे अनुमान में हम मधुर वाणी से किसी भी परिस्थिति पर विजय पा सकते हैं। ऐसी कोई परिस्थिति नहीं हो सकती जहाँ कटु वचन बोलना : आवश्यक हो ।